SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-4, June- 2024
www.shikshasamvad.com

"आधुनिक युग में पर्यावरण संरक्षण : एक समालोचनात्मक अध्ययन"

महिमा
शोधार्थिनी
ग्लोकल विश्वविद्यालय,
सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

डॉ0 सोनिया यादव
शोध पर्यवेक्षिका
ग्लोकल विश्वविद्यालय,
सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

सारॉंश

*पर्यायवरण शब्द को **The Universal Encyclopaeida** इस प्रकार परिभाषित करता है – ''उन सभी दशाओं संगठन एवं प्रभावों का समग्र जो किसी जीव या प्रजाति के उद्भव विकास, मृत्यु को प्रभारित करते है, पर्यावरण कहलाता है''। आज पूरा विश्व पर्यावरण संरक्षण की समस्या को लेकर चिन्तित है इसका संरक्षण हमारी महती आवश्यकता हैं। क्योंकि हम अच्छी तरह से जानते हैं कि यदि हम पर्यावरण संरक्षण नहीं कर पाते तो हमारा भविष्य भी सुरक्षित नहीं है। प्रकृति एवं मनुष्य के मध्य सम्बन्ध ऐसा ही है जैसे एक सिक्के के दो पहलू। मगर अफसोस इस बात का है कि मनुष्य को यह बात तब समझ आयी जब यह प्रकृति को विनाश के कगार तक ले आया। आज मनुष्य को समझ आने लगा कि यदि वह प्रकृति को नहीं बचायेगा तो स्वयं भी नहीं बच पायेगा।*

''वातावरण के भौतिक, रासायनिक एवं जीव वैज्ञानिक अवस्था में इस प्रकार का परिवर्तन जिससे मानव, जानवर, वनस्पति अथवा सौन्दर्य प्रतीकों को हानि पहुँचाती है प्रदूषण है।'' मनुष्य की बढ़ती लालसा अत्यधिक आधुनिक बनने की चाहत जनसंख्या दर में तीव्र गति से वृद्धि, वैज्ञानिक संयत्रों का बढ़ता उपयोग, तेज रफ्तार के साथ विलासिला पूर्ण जीवन जीने की चाहत आदि ने मनुष्य को मजबूर कर दिया कि वह प्रकृति से छोड़छाड़ करें।

वायुमण्डलीय ताप में वृद्धि स्वयं की क्रियाओं का परिमाण है। It is true that "Man is Fashioned by the Environment." प्रकृति की तरह जीवन भी एक लय होती है न जीवन प्रलय चाहता है और न ही प्रकृति। वस्तुतः प्रकृति और मनुष्य के बीच तालमेल की कमी ने ही सारी समस्याओं को जन्म दिया है। प्रकृति पर विजय पाने की लालसा ने मनुष्य को इतना निष्ठुर बना दिया है कि स्वयं मनुष्य उसे विनाश पर तुल गया। विनाश इस कदर बढ़ा कि जल, वायु, मृदा सभी प्रदूषित होते चले गये। माँ कही जाने वाली नदियाँ भी इस प्रदूषण से बच नहीं सकती। मनुष्य विकास की लालसा में यह भी भूल गया कि "**जल ही जीवन है।**" जब जीवन ही नहीं रहेगा तो विकास किस काम का।

आज के आधुनिक युग में विज्ञान का प्रसार बढ़ रहा है। परमाणु, परीक्षण जैसे अनेक परीक्षण पर्यावरणीय चिन्ताओं को जन्म दे रहे हैं। आज सम्पूर्ण विश्व में मनुष्य तथा पर्यावरण के मध्य खतरनाक असंतुलन पैदा हो गया है। पर्यावरण के असंतुलन के कारण ही कई तरह के कुप्रभाव सामने आ रहे है। जैसे – ओजोन क्षरण, ग्रीन हाउस प्रभाव, ग्लोबल वार्मिग, अम्मीय वर्षा, समुद्र की सुनामी लहरें, आइरीन तूफान ओजोन क्षरण, ग्रीन हाउस प्रभाव, ग्लोबल वार्मिग, अम्मीय वर्षा, समुद्र की सुनामी लहरें, आइरीन तूफान आदि।

इन सम्पूर्ण समस्याओं का मूल कारण वैज्ञानिक आविष्कार व तकनीकी है **"अविच्छिन्न वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति ने मनुष्य को अभूतपूर्व अधिकार दे दिया है। इस शब्दशः पर्वतों को हटा सकते है, नदियों के मार्ग बदल सकते हैं, नए सागरों को निर्माण कर सकते हैं और विशाल रेगिस्तानों को उर्बर मरूद्यानों में परिणित कर सकते हैं। हमारे उत्पादक व आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी कार्यकलाप अंतरिक्ष तक विस्तृत हो गये है।"**

विकास के विनाश का यह दृश्य प्रकृति के अत्यधिक दोहन या शोषण के कारण ही उत्पन्न हुआ है। **एंगेल्स** ने भी इस सम्बन्ध में आगाह किया था कि "**प्रकृति पर अपनी मानवीय विजयों के कारण हमें आत्म प्रशंसा में विभारे नहीं हो जाना चाहिए क्योंकि प्रकृति पर ऐसी चीज का हमसे प्रतिशोध लेती है। प्रकृति का प्रतिशोध आज पूरे विश्व में पर्यायवरणीय संकट के रूप में प्रकट हो रहा है। वैज्ञानिक आविष्कारों और प्राकृतिक सम्पदाओं के विनाश के कारण जो पर्यावरणीय परिवर्तन विगत दो दशकों में दुनिया में हुआ है उसके कारण मानव और अन्य जीव–जन्तुओं के अस्तित्व का संकट उपस्थित हो गया है।**"

हम यह नहीं जानते है कि हमें प्रकृति के संसाधनों का दोहन नहीं करना चाहिए परन्तु हम पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए प्रकृति से उतना ही लें जितना हम उसे लौटा सकें। ऐसा नही है कि हमारी सरकार पर्यावरण संरक्षण के लिए कोई सकारात्मक प्रयास नहीं कर

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

रही है। भारत सरकार पर्यावरण संरक्षण से भली–भांति परिचित है तभी तो मन्त्री परिषद में **''पर्यावरण मंत्रालय''** पृथक से है। पर्यावरण को सुधारने के लिए सरकार न सिर्फ लोगों को इस बारे में सक्रिय माध्यमों से जानकारी देती है, बल्कि एक सक्रिय सदस्य की तरह कार्य भी करती है।

वित्तमंत्री **श्री प्रणव मुखर्जी** ने 6 जुलाई को आग बजट 2009–2010 पेश किया। बजट में पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी राष्ट्रीय कार्ययोजना को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय गंगा नदी थाला प्राधिकरण गठित किया गया है। राष्ट्रीय नदी और झील संरक्षण आयोजना के अन्तर्गत बजटीय आबंटन 2008–09 के बजट अनुमान में 335 करोड़ से बढ़ाकर 2009–10 के बजट अनुमान में 562 करोड़ रूपये किया गया।

पर्यावरण संरक्षण के लिए कार्यशालाओं, गोष्ठियों, सेमिनार तथा सम्मेलन का आयोजन भी किया जा रहा है। स्वयं सेवी संस्थायें भी अपना पूरा योगदान दे रही है फिर भी पर्यावरण प्रदूषण की समस्या समाप्त होने का नाम ही नहीं ले रही हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि हम सभी सरकार के ऊपर ही निर्भर रहते है परन्तु स्वयं कुछ करने का प्रयास नहीं करते। हम संगोष्ठियों में जाकर बड़े–बड़े भाषण तो देते हैं पर उस पर अमल नहीं करते। आज आवश्यकता समाज से ज्यादा स्वयं को जागृत करने की है। इसके लिए हमें निम्न उपाय करने होंगे –

1. नर्सरी से ही बच्चों को वृक्ष लगाने के लिए प्रेरित किया जाये जिससे उनमें बचपन से ही पर्यावरण संरक्षण की भावना जागृत हो।
2. जनता में जागरूकता लाने के लिए प्राथमिक व माध्यमिक स्तर पर प्रतियोगितायें जैसे – वाद–विवाद प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता आदि का अधिक से अधिक आयोजन किया जायें।
3. उच्च स्तरीय पाठ्यक्रम में विभिन्न प्रकार की क्रियाओं जैसे पर्यावरणीय गोष्ठी, कार्यशाला, सेमिनार, तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों का समावेश किया जाये।
4. पारिवारिक स्तर पर भी इस बात का ध्यान रखना होगा कि पॉलिथीन, धर्माकोल, प्लास्टिक से बने साधनों आदि का प्रयो न किया जाये।
5. पर्यावरण शिक्षा को हर क्षेत्र में आवश्यक कर दिया जायें।
6. पर्यावरण–प्रदूषण से होने वाली हानियों की जानकारी व पर्यावरण –संरक्षण से होने वाले लाभों को नुक्कड़ नाटक आदि के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाया जायें।

उपर्युक्त तथ्यों के विवेचन से स्पष्ट है कि पर्यावरण की समस्या हमारे ही द्वारा निर्मित है, बेशक औद्योगिक विकास को रोका नहीं जा सकता लेकिन इसको नियन्त्रित करने के लिए

पर्यावरण प्रदूषण को मानकों को लागू तो किया जा सकता है। अगर ऐसा न किया गया तो आपका और हमारा अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। परिणाम स्वरूप विकास का कोई औचित्य ही नहीं रह जायेगा। कही ऐसा न हो कि विकास प्रकृति का विकास बन जाये। समर्पण के साथ–साथ प्रकृति मनुष्य से अपनी रक्षा भी चाहती है। इन्हीं भावों को **'ताप के ताए हुए दिन'** में **कवि त्रिलोचन** ने इस प्रकार व्यक्त किया है – ''इस पृथ्वी की रक्षा मानव का अपना कर्तव्य है इसकी वनस्पतियाँ, चिड़ियाँ और जीव जन्तु उसके सहपात्री है इस तरह जलवायु और सारा आकाश अपनी–अपनी रक्षा मानव से चाहते है उनकी इस रक्षा में मानवता की भी तो रक्षा है।''

अतः मानव को अपनी करतूतों पर लगाम लगानी चाहिए तथा **''जिओं और जीने दों''** के सिद्धांत का पालन करते हुए पर्यावरण– संरक्षण में जुट जाना चाहिए।

संदर्भ :

1. चन्द्र, जगदीश, ''समाज और पर्यावरण'' पृष्ठ –5 ।
2. खादी ग्रामोद्योग अक्टूबर 2015–55 –56
3. कुरुक्षेत्र –जून 2020 ।

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-04, June- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-June-2024/24

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

महिमा एवं डॉ0 सोनिया यादव

For publication of research paper title

“आधुनिक युग में पर्यावरण संरक्षण : एक समालोचनात्मक अध्ययन”

Published in ‘Shiksha Samvad’ Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-04, Month June, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com